स्व. श्री घनश्याम दासजी बिड़ला
जन्म : रामनवमी सन् १८९४
स्वर्गवास : ११ जून सन् १९८३

आज से १०४ वर्ष पूर्व सन् १८९४ रामनवमी के दिन राजा बलदेवदासजी एवं रानी योगेश्वरी के तृतीय पुत्र के रूप में श्री घनश्याम दासजी का जन्म राजस्थान के एक छोटे से गाँव पिलानी में हुआ। भगवान राम और आपकी जन्मतिथि की साम्यता मानो किसी ईश्वरीय विधान को इंगित कर रही हो। स्वयं बिड़लाजी के अनुसार उनकी मनोकामना वैश्यर्षि बनने की थी अर्थात् धनोपार्जन करते हुए धन की लिप्सा से अपने आपको मुक्त रखने की चेष्टा मात्र थी। उनके जीवन के सभी कार्य कलाप इस वांछित मनोकामना की पूर्ति के ध्येय से संचालित हुए।

परिवार में आपसे बड़े दो भाई - श्री जुगल किशोर एवं श्री रामेश्वर दास, छोटा भाई बृजमोहन एवं तीन बहनें थी। भाइयों ने अपने जीवन काल में क्रमशः धर्म, व्यापार एवं उद्योग में यथेष्ट यश अर्जित किया। स्कूली शिक्षा के नाम पर लोअर प्राइमरी चौथा दर्जा उत्तीर्ण की तथा बाकी का ज्ञान स्वाध्याय से अर्जित किया। १३ वर्ष की आयु में दुर्गा देवी से विवाह हुआ। पत्नी की मृत्यु हो जाने पर १८ वर्ष की आयु में दोबारा विवाह महादेवी जी के साथ सम्पन्न हुआ। प्रथम पत्नी से आपको रत्न लक्ष्मीनिवास तथा दूसरी पत्नी से चन्द्रकला, अनुसूया, शान्ति नामक पुत्रियाँ और कृष्ण कुमार और बसन्त कुमार नाम के पुत्र हुए। सुयोग्य पुत्रों-लक्ष्मी निवास जी ने साहित्य एवं कला, कृष्ण कुमारजी ने राजनीति और पत्रकारिता तथा बसन्त कुमारजी ने उद्योग एवं धर्म के क्षेत्रों में विरासत में पैतृक गुणों को खूब निभाया, बढ़ाया-चढ़ाया है और आपका नाम प्रकाशवान किया है। पौत्र आदित्य बिड़ला ने भारत की सीमाओं से बाहर थाइलैण्ड, फिलीपिन्स, मलेशिया, इंडोनेशिया देशों में उद्योग-कारखाने सफलता पूर्वक चलाकर दादा के सपनों को साकार किया एवं इनके प्रपौत्र कुमार मंगलम भी उसी यशस्वी राह पर अग्रसर हैं।

तेरह वर्ष की आयु में मुम्बई में चाँदी के व्यापार से आपका कैरियर प्रारम्भ हुआ। लेकिन पारिवारिक परम्परागत सट्टे और व्यापार में आपकी रूचि नहीं थी। पिता तथा पितामह की तरह जिन्होंने लीक से अलग होकर राजस्थान से बहुत दूर मुम्बई तथा कोलकाता में अपना व्यापार फैलाया था, उनकी स्वयं की इच्छा 'अपना स्वयं का' कुछ करने की थी। उच्च महत्वाकाक्षाएँ थी। दलाली महत्वाकाक्षाओं की पूर्ति में सफलता का प्रथम पत्थर सिद्ध होगी, इस विश्वास के साथ कोलकाता के जूट के गनी और पटसन के दलाली बाजार में कदम रखा। पहले मास में ६००० रू० की आय १९१० में १६ साल के युवक की यह सफलता मानो उनके साधारण कैरियर का पूर्वाभास था। फिर पीछे मुडकर नही देखा। जी. एम. बिड़ला एण्ड कम्पनी नाम की दलाली के लिए फर्म की स्थापना की। २५ वर्ष की आयु से प्रारम्भ आपका औद्योगिक कैरियर इस सदी के आठवें दशक के अन्त तक एक के बाद एक सफल उद्योग की स्थापना का इतिहास है :-

बिरला ब्रदर्स लि० (१९१८), बिरला जूट मिल्स (१९१९), जियाजीराव कॉटन मिल (१९२१), केसोराम कॉटन मिल (१९२५), सतलज कॉटन मिल (१९३४), टेक्सटाइल मशीनरी कॉरपोरेशन (१९३९), हिन्द गैस लि० (१९४२), वैस्टर्न बंगाल कोजफील्ड लि० तथा सैंट्रल कोलफील्ड लि० (१९४४), सौराष्ट्र केमिकल (१९४५), जयश्री टेक्सटाइल (१९४५), दिग्विजय वूलेन मिल (१९४८), ग्वालियर रेयन और उसके अन्तर्गत नागदा, हरिहर, कालिकट के कारखाने, हिन्दुस्तान एल्युमिनियम (हिण्डालको-१९६२), रेणुसागर पावर प्लांट, सैंचुरी स्पिनिंग मिल्स, मैसूर सीमेण्ट (१९६५), पिलानी इन्वेस्टमंट कम्पनी आदि। विदेश में ईस्ट इण्डिया प्रोड्यूस क० प्रा० लि० लन्दन, बिड़ला ए. जी. जुग, अमरीकन ईस्ट इण्डिया कार्पोरेशन-न्युयार्क जैसी फर्मों की स्थापना उन्होने की और कराया।

१९१९ से लेकर आठवें दशक के अन्त तक श्री धनश्याम दासजी बिड़ला के कुशल निर्देशन में बिड़ला बन्धुओं की २०० ईकाइयां सीधे और परोक्ष नियंत्रण में कार्यरत थी। यह तथ्य इस दृष्टि से और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि सन् १९१९ में जब आपने उद्योग क्षेत्र में पदापर्ण किया था और उद्योग का 'क-ख-ग' सीख रहे थे, टाटा अपना इस्पात का कारखाना स्थापित कर चुके थे। भविष्य में एक स्थिति ऐसी आई कि आपका नाम भारतीय उद्योगपतियों में टाटा के साथ लिया जाने लगा। मारवाड़ियों के लिए यह बहुत गर्व की बात थी कि सन् १९३१ में दस मारवाड़ी कम्पनियाँ, १९५१ में १०० और १९६८ तक बिड़ला के विकास क्रम के साथ यह संख्या पारसियों तथा गुजरातियों के बराबर हो गई थी। व्यापार प्रशासन के क्षेत्र में 'पडता सिस्टम' के बिड़ला जी अविष्कारक थे। यह उनका मैनेजमेंट क्षेत्र में एक मौलिक योगदान है। 'पडता' अर्थात् क्या पडा उत्पादन व्यवस्था तथा आर्थिक नियंत्रण के दो पलड़ों पर टिका हुआ मालिक को उद्योग की दैनिक आर्थिक उपलब्धि का एक रिपोर्टिंग सिस्टम है, जिसके आधार पर वह व्यस्थापकों का मूल्यांकन कार्य योजनाओं की कार्य समीक्षा आदि करके बड़ी औद्योगिक प्रतिस्पर्धा के बीच औद्योगिक विस्तार करने में सफल होता है। मैनेजमेंट का यह देशीय सिस्टम अन्य पश्चिम सिस्टम से ज्यादा कारगर साबित हुआ है।

'भारतीय उद्योग की प्रगति मेरी राजनीति का मुख्य उद्देश्य है' की भावना को कभी नहीं छुपाने वाले श्री घनश्याम दासजी अपने विचारों में पूर्णतया स्पष्ट तथा उद्देश्य के प्रति पूर्णतया समर्पित थे। 'व्यापार मेरा धर्म है' के कथनानुसार १९२७ में जेनेवा में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन में मालिकों के प्रतिनिधि के रूप में, १९२८ में ब्रिटानिया सरकार श्रम सम्बन्धी राज आयोग की सदस्यता, १९२९ में इडियन चैम्बर्स ऑफ कामर्स के संस्थापक प्रधान तथा टाटा के सहयोग से निर्मित 'बाम्बे प्लान' उनके विस्तृत कार्य क्षेत्रों में कुछ एक कार्य थे।

स्वतंत्रता संघर्ष के प्रथम दौर में क्रान्तिकारी विचारधारा से प्रभावित रहने पर अंग्रेज सरकार ने उनकी गिरफ्तारी का वारंट निकाला।

तिलक तथा लाला लाजपत राय का सानिध्य तथा मालवीय जी के आग्रह पर केन्द्रीय धारा सभा की सदस्यता के लिये कांग्रेसी प्रतिद्वंदी श्रीयुत् श्री प्रकाश के खिलाफ चुनाव लड़कर विजय आदि प्रथम चरण में उनके कुछ मुख्य राजनीति क्रियाकलाप रह गये। सन् १९२६ में अंग्रेज सरकार द्वारा प्रदत्त 'सर' की उपाधि लेने से इन्कार करने पर गांधीजी ने उनकी राष्ट्रवादिता की प्रशंसा की। कांग्रेस की नीति-रीति के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंनें १९२७ में 'हिन्दुस्तान टाइम्स' खरीद लिया। इलाहाबाद तथा पटना से महामना मालवीय जी तथा देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद द्वारा क्रमशः प्रकाशित 'लीडर' एवं 'सर्च लाइट' अखबार को भी आपका आर्थिक सहयोग प्राप्त था। सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, भारती प्रकाशन पत्रिका के क्षेत्र में आपकी सेवा के अन्य उदाहरण हैं। 'हरिजन' अखबार आपके सहयोग से गांधीजी के सम्पादन में निकलता था। गांधी जी ने १९३२ में जब अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ की स्थापना की, आप को इसका अध्यक्ष बनाया गया।

गांधीजी तथा अंग्रेजो के बीच उन्होंने सेतु का कार्य किया। गांधीजी को १९३१ में इंग्लैण्ड में आयोजित दूसरे गोलमेज सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करने वाले आप थे तथा स्वयं भी वहां भाग लिया। गांधीजी से कई विषयों पर वैचारिक मतभेद होने पर भी वह उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु थे। आजादी तक स्वयं भी खादी पहनी और परिवार के सदस्यों को भी पहनाई। गांधीजी के वे भामा साह थे। मुक्त हस्त से गांधीजी के रचनात्मक कार्यो के लिये दान भी देते थे। 'बिड़ला हाउस' के दरवाजे गांधी जी के लिये हमेशा खुले थे। वहाँ उन्होनें तथा देश के अन्य गणमान्य राष्ट्रीय नेताओं ने बिड़ला जी का आतिथ्य कई बार स्वीकार किया था। गांधीजी ने अन्तिम साँस इसी बिड़ला हाउस में ली थी। उनका बिड़ला हाउस में ३३ वर्ष तक सम्पर्क रहा। इसी स्मृति को सुरक्षित रखने के लिए घनश्याम दासजी ने यह भवन देश को समर्पित कर दिया। अन्यत्र कलकत्ता के बिड़ला पार्क को इन्डस्ट्रियल म्यूजिम के लिए दान दिया। स्वतंत्रता के पश्चात भी आपने प्रधानमंत्री फन्ड, 'राष्ट्रीय सुरक्षा कोष' आदि में दान देने की परम्परा कायम रखी।

नेहरूजी एवं श्रीमती इन्दिरा गांधी को भी आर्थिक एवं जनहित के विषयों में अपने विचारों से अवगत कराते रहते थे। कोई भी लोकापकारी कार्य हो, बिड़लाजी उसके लिए भरपूर आर्थिक सहयोग देते थे। यह क्रम महामना मालवीय जी द्वारा निर्माणधीन काशी हिन्दू विश्वद्यिालय के लिये ३ लाख रूपये के चन्दे से प्रारम्भ होकर श्री बाल गंगाधर तिलक की १९२० में मृत्यु पर्यन्त स्थापित तिलक स्मारक कोष, गांधी स्मारक, पटेल स्मारक निधि, रविन्द्र शत वार्षिकी एवं विश्वविद्यालय, अलीगढ़, स्वतन्त्र भारत में प्रधानमंत्री सहायता कोष तथा 'राष्ट्रीय सुरक्षा कोष' में दान अनवरत जारी रहा। कितनी ही प्रतिभाओं को उजागर करने में उनकी समयोचित सहायता वरद हस्त सिद्ध हुई। युवा भौतिकवादी नोबेल पुरस्कार विजेता श्री चन्द्रशेखर वेंकटरमण, प्रसिद्ध इतिहासकार आर. सी. मजूमदार के कार्यो के लिये उन्होंने सहायता दी। श्री कन्हैया लाल माणिकलाल मुंशी जैसी विख्यात हस्तियों का सम्मान किया। हजारी प्रसाद द्विवेदी, बनारसी दास चतुर्वेदी तथा बालकृष्ण जी शर्मा 'नवीन' के आग्रह पर काशी नागरी प्रचारणी सभा को अनुदान दिया। प्रसिद्ध संगीतज्ञ भारतखंडे के साथ उनका आत्मिक संबंध था। १९१४ में मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी कार्यो के लिये आर्थिक अनुदान की परम्परा मृत्युपर्यन्त कायम रही। जसीडीह में १९२१ में मारवाड़ी आरोग्य भवन का निर्माण इसी श्रृंखला की एक कड़ी है। 'परहित सरस धर्म नही भाई' को आपने अपने जीवन में साकार किया।

१९९४ में आपके जन्म के साथ तीन हजार आबादी वाले छोटे से गांव पिलानी को अपने जीवन काल में साहित्य, संस्कृति एवं विज्ञान की त्रिवेणी के रूप में विकसित करके आपने भारतीय गौरव 'तक्षशिला एवं नालन्दा शिक्षण' की परम्परा में एक नया अध्याय जोड़ा। १९२९ में बिड़ला एजुकेशन ट्रस्ट पिलानी द्वारा प्रारम्भ किये हुये कार्यो का चरमोत्कर्ष विकास अमरीका की प्रसिद्ध संस्था मैसाच्यूसेट्रस इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालाजी के सहयोग से १९९४ में पिलानी में बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालाजी एण्ड सांइस के रूप में दिखाई पड़ता है। भिवानी में स्थापित अन्यत्र 'टेक्निकल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्सटाइलस' अपने क्षेत्र में सर्वोत्त्म है। तारामंडल की स्थापना के पीछे भी खगौलिकी के अध्ययन की विस्तार की अभिप्रेरणा थी। मृत्यु से कुछ महीने पहले वह भारत में एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के एक मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट की स्थापना के लिये व्यग्र थे। 'विद्ययामृतमयश्रुते - विद्या की उपासना से मनुष्य अमर हो जाता हे। ईशावास्योवनिषद् के इस वाक्य को अपने जीवन में पूर्णतया उतार लिया था। तिलक का 'गीता रहस्य', स्वामी दयानन्द सरस्वती का 'सत्यार्थ प्रकाश', गीता, श्रीमद्भागवत, रामचरित मानस आपके प्रिय ग्रन्थ थे। मार्क्स, अंग्रेजी साहित्य खूब पढ़ा था। 'ज्ञान बाटने के लिए है' के अनुसार उनकी व्यावहारिक विद्वता के दर्शन उनके पत्र लेखन, डायरी, यात्रा-वृत्तान्त, यदा-कदा लिखे निबन्ध, लेख में स्पष्ट झलकती है। 'बापू की प्रेम प्रसादी' के नाम से चार खण्डों में प्रकाशित बापू से उनका पत्राचार, 'गांधजी की छत्रछाया में', 'बिखरे विचारों की भरोटी' आपकी अन्य रचनाएँ हैं। 'कृष्ण वन्दे जगद्गुरूम' आपकी सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक रचना है।

जहाँ बुद्धि कुंठित होती है, वहाँ से श्रद्धा का क्षेत्र शुरू होता है। धर्म की व्याख्या करते हुए बिड़ला जी ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'कृष्ण वन्दे जगद्गुरूम' में लिखा है। धर्म की संकीर्ण परिभाषा से उठकर धर्म की औचित्यता को सिद्ध करते हुए उन्होनें अन्यत्र कहा,'समाज को नैतिकता के दायरे में रखने के लिए ऐसे खूंटे उपयोगी होते हैं। धार्मिक होना हमारा विशेष गुण है। इसी ने हमें तीन-चार हजार वर्षों से जीवित रखा है। 'धार्मिक परम्परा को जीवन्त रखने के उनके प्रयास पिलानी स्थित शारदा-मन्दिर, नागदा स्थित शेषशायी मन्दिर और रेनुकूट स्थित मन्दिर के रूप में प्रत्यक्ष हैं। उत्तराखण्ड की यात्रायें - केदारजी (१९७०), बद्रीनाथ (१९७१), गंगोत्री (१९७२), जमुनोत्री (१९७४), और केदारनाथ की १९८२ में ८८ वर्ष की अवस्था में बिना डाँडी पैदल तय करना उनके उत्साह का प्रतीक था, यद्यपि आपका धार्मिक कर्म-काण्डों में विश्वांस नही था, गंगोत्री की यात्रा में भाई रामेश्वर को तर्पण देते हुए कहे हुए वाक्य आपकी धार्मिक वृत्ति एवं भ्रात प्रेम का परिचारक है,''रामेश्वर भाया जठे भी तू है, प्रसन्न रहिये-भगवान थांकी आत्मा ने शान्ति देवे''।

पिलानी में जहाँ आपका जन्म हुआ था, वहाँ सिर्फ एक मात्र माहेश्वरी परिवार आपका ही था। अन्य परिवार अग्रवालों के तथा अन्यों के थे। अतः स्वभाविक रूप से उनका निजी संबंध अग्रवाल महानोभावों से रहा जो उनके प्रतिष्ठानों में शीर्ष पर रहे। कोलवार प्रकरण ने भी उनके तथा माहेश्वरियों के एक वर्ग के बीच में दरार पैदा कर दी थीं। दूरियां मिटाने के लिए सार्थक प्रयास श्री रामगोपालजी माहेश्वरी तथा अन्यों ने उन्हें समाज के पूना सम्मेलन में आमंत्रित किया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर समाज को उद्‌बोधित किया। उन्होंने कहा – ''वें फक्र के साथ कह सकते हैं कि माहेश्वरी समाज का स्थान विश्व के सभी प्रमुख समाजों में कहीं बहुत ऊँचा है।'' उन्होंने आगे कहा कि जाति गंगा के दर्शन कर हीरक जंयती (१२ अप्रैल १६७४) में उनकी उपस्थिति एक ऐसा ही अवसर थी। एक मुश्त अपने परिवार की ओर से २५ लाख रूपये की स्वीकृति आपके सामाजिक प्रेम को दर्शाती है।

व्यक्तिगत स्तर पर संगीत, पाक शास्त्र में उनकी रूचि थी। ढलती उम्र में तैल-चित्र (चित्रकला), फ्रैंच भाषा का प्रचुर ज्ञान अर्जित कर लेना आपकी जिज्ञासु प्रवृत्ति एवं ज्ञान के जिए उम्र कोई बंधन नही है, जैसे विचारों का प्रतिमोदन था। उनके परिचय का दायरा बहुत व्यापक था। देश-विदेश के प्रतिष्ठित लोगों से जिनमें अमेरिका के राष्ट्रपति आइजानहॉवर, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री चर्चिल, सोवियत संघ के प्रधानमंत्री खुश्चेव, युगोस्लाविया के राष्ट्र अध्यक्ष मार्शल टीटो, फ्रांस के राष्ट्रपति जनरल दिगाल तथा ब्रिटेन की प्रधानमंत्री मार्गरेट थैचर से उनका व्यक्तिगत परिचय था। उनकी उपलब्धियों के लिये भारतीय सरकार ने उन्हें १६५७ में पद्‌मविभूषण से अलंकृत किया था। १६५६ में राजस्थान विश्वविद्यालय में उन्हें मानद् डी लिट्, १६६७ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने मानद् एल. एल. डिग्री प्रदान की। कलकत्ता की एशियाटिक सोसायटी द्वारा १६४६ तथा १६८० में उन्हें सम्मानित किया गया।

निःसंदेह वे बीसवी सदी के उन सबसे महत्वपूर्ण लोगो में थे, जो भारतीय उप-महाद्वीप के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के शिल्पी रहे। वे सच्चे कर्म योगी थे। चरैवति-चरैवति से निरन्तर अनुप्रणित उनके जीवन का ही तान थी-अढ़ो, आगे और आगे 'भौतिक समृद्धि' में वृद्धि और फलतः मानव आत्मा की मुक्ति, उनके जीवन का मंत्र था। सफलता पाकर बैठ जाने वालों के पास सफलता बैठी नही रहती, ऐसा उनका कहना था। रेंगों नही,दौड़ो और दौड़ने वालों को सुझाते-प्रोत्साहित करते उड़ने के लिए। नचिकेता जैसी जिज्ञासा, ध्रुव जैसा संकल्प, और प्रहलाद जैसा विश्वास मानो विधाता ने एक ही व्यक्ति में गूंथ दिये थे। उनमें ब्राहमण का चिन्तन, क्षत्रिय का साहस, वैश्य का व्यवहार कुशलता, और शुद्र का निरन्तर श्रम सम्मिलित था। सभी ने मिलकर उन्हें एक सफल व्यक्ति बनाया। इसलिए कहा जा सकता है कि सफलता पाने के लिए उनका जीवन दूसरे लोगो के लिए 'सफलता का कुंजी' है।

किसी ने उनसे पूछा था कि आपकी इस अपवादात्मक सफलता का रहस्य क्या है उनका उत्तर था '' सब इन्सानों का खेल है।'' इतिहास इस बात का गवाही है कि उनमें व्यक्ति को, उसकी क्षमता को पहचानने की अद्‌भुद शाक्ति थी। योग्य व्यक्तियों का चयन करना, चयनता में ईमानदारी, मालिक प्रति पूर्ण निष्ठा, घर-घराना, कुशाग्र बुद्धि सर्वोपरि था। उस पर पूर्ण जिम्मेदारी डालना, उसे पूर्ण अधिकार देना, उसकी प्रतिभा को उभारने का अवसर देना, उस पर भरोसा करना और सफलता का श्रेय देना उनकी विशेषता थी। उनकी केवल एक उपेक्षा थी, निर्धारित लक्ष्य को पूर्ण करने की प्रयत्नों की पराकाष्ठा की। २४ घण्टे में ४८ घण्टे का बोध कराने वाले बिड़ला जी ने असम्भव का सम्भव कर दिखाया था। यह सब उन्होंने जीवन में अनुशासन और संयम द्वारा सिद्ध किया था। स्वयं निर्धरित दिनचर्या का वह बड़ी कडाई से पालन करते थे। यह उनका आत्म संयम था कि ३२ वर्ष की उम्र में विधुर हो जाने पर दुबारा विवाह न करने का निर्णय लेकर ५७ वर्ष का एकाकी जीवन जिया। अपने आप को पूर्णतया कर्म को समर्पित कर दिया। पुत्र को शिक्षा देने के लिए जीवन-पर्यन्त सुपाड़ी खाना छोड़ दिया और उसे बिना खाये लगभग साठ वर्ष बिता दिये। चारित्रिक गुणों के कारण ही वे अपन जीवन काल में एक जीवंत किवदन्ती बन गये थे।

११ जून १६८३ को लंदन में उनका स्वर्गवास हो गया। आज उनका भौतिक शरीर हमारे बीच नही है। लेकिन उनकी निम्न सूक्तियाँ हमारा मार्गदर्शन हमेशा करती रहेंगी और हमें हमेंशा सफलता की ओर अग्रसर रखेंगी।

''गलती से सीखो तो आशीर्वाद है, नही सीखों तो श्राप है। मेहनत ने आज तक किसी को नही मारा। आलस, अनियमितता और आरामतलबी जी-जान के दुश्मन हैं। जरूरी और गैरजरूरी में भेद करने की जिसे समझ हो वही अकलमंद है। काल करे सो आज कर आज करे सो अब। जो जल्दी सोये, जल्दी उठे, सुखी रहे, निरोग रहे, धनी रहे। जो समझता है कि मैं सब समझता हूँ वही सबसे बड़ा नासमझ है। परोपकार का कोई अवसर मत चूको। क्षीर सागर है जीवन, इसे जीतना मथोगे, उतना ही नवनीत पाओगे।